6/1/1966 गुरुवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– ओम नमः शिवाय.....

ओमशांति! ..जहाँ जिसका जन्म हो वहाँ ही उसका गायन ज़्यादा होता है। तो भारत में ये शिव का तो गायन बहुत ही है; क्योंकि शिव की जयन्ती तो भारत में ही है और शिवबाबा ही आ करके फिर बच्चों को ये पतित से पावन करते हैं या मनुष्य जो पतित हैं उनको पावन मनुष्य बनाते हैं; परन्तु पावन मनुष्य को किस नाम से बतावें? ये मनुष्य तो पतित है। मनुष्य कहते रहते हैं– हे पतित–पावन, आओ! अभी मनुष्यों को और कोई टाइटिल मिलना चाहिए जबकि पावन हो जाते हैं। इसलिए फिर उनको टाइटिल .. मिल जाता है– देवता; क्योंकि उनमें दैवीगुण आते हैं। अभी मनुष्यों में दैवीगुण नहीं हैं। थे, अब नहीं हैं। तो इससे सिद्ध होता है कि पतित–पावन...। जब मनुष्य पतित बनते हैं तो ज़रूर उनमें विकार ही होते हैं अर्थात् विकारी होते हैं। तो ये बिल्कुल सहज है समझना कि भारत निर्विकारी था और उस समय के मनुष्य मात्र को फिर निर्विकारी कहते थे। पीछे ज़रूर राजाई तो होगी ना। राजाई के बिगर तो कभी कुछ हो ही नहीं सकता है। इसलिए कहा ही जाता है कि वाइसलेस यानी निर्विकारी राज्य था वा सॉवरन्टी थी। अभी मनुष्य की ऐसी पत्थरबुद्धि हो गई है जो इन बातों का चिंतन नहीं करते हैं। उनके ध्यान में नहीं आता है, जैसे कि ये कुछ जानते ही नहीं हैं। ये देवी–देवताओं का राज्य कैसे स्थापन हुआ वो तो जानते नहीं हैं, अगर जान जाएं तो फिर बाप को भी जान जाए; पर नहीं जानते हैं तो कोई–न–कोई को रख दिया है ऐसे ही। फिर उनसे कोई सिद्ध नहीं होता है कि कृष्ण, जिसको भगवान कहते हैं, उसने आ करके कोई सूर्यवंशी राजधानी स्थापन की। वो कोई गीता से सिद्ध नहीं होता है। बाप ने बैठकर समझा दिया कि गीता में तो प्रलय कर दी; क्योंकि बाकी जो पाँच पाण्डव बचे वो तो पहाड़ पर गलने के लिए चले गए। तो गोया गीता से उन्होंने प्रलय सिद्ध कर दी है, नहीं तो है राजयोग का ज्ञान यानी परमपिता परमात्मा ने आ करके पावन राजयोग सिखलाया, राजाई प्राप्त करने का सिखलाया। तो राजाई प्राप्त करने के लिए सिखलाया भी ज़रूर भगवान ने आ करके; परन्तु एक तो नाम बदल दिया और फिर राजाई कैसे शुरू हुई, वो उल्टा ज्ञान दे दिया जो इसको प्रलय कर दिया। पीछे कहते हैं कि श्रीकृष्ण पीपल के पत्ते पर...। तो देखो, कहाँ की बात कहाँ चली गई! इसलिए सब बिचारे गोया कुछ भी नहीं जानते; क्योंकि दिखलाते तो कृष्ण ही है ना। कृष्ण तो है ही वैकुण्ठ का मालिक, सतयुग का मालिक। तो ज़रूर कलियुग के पीछे फट से सतयुग आएगा ना, जैसे रात के पिछाड़ी फट से दिन आता है। तो उन बिचारों ने...। ये भावी ड्रामा की....क्योंकि गाया भी जाता है कि बाप आ करके वर्सा देने वाला है। ये भी तो समझते हैं कि बाप से वर्सा मिलता है। ''गॉड फादर''– सभी फादर तो कहते हैं ना। तो फादर से ज़रूर वर्सा मिलता है और फिर सिर्फ गॉड फादर नहीं कहते हैं। कहते ही हैं हैविनली गॉड फादर। अच्छा, हैविनली गॉड फादर कहना या यही समझना (कि) भगवान ज़रूर नई दुनिया स्थापन करेंगे। तो नई राजधानी भी स्थापन करनी पड़े; क्योंकि नई दुनिया में फ़ौरन नई राजधानी है। सतयुग के आदि में तो देखो राजधानी है। कलहयुग के अंत में कहाँ है राजधानी! क्योंकि अभी तुम संगम पर हो और बाप के सन्मुख हो, जिस बाप को भक्तिमार्ग में याद करते आए हैं। अभी बच्चे समझ गए हैं कि बरोबर बाप कल्प–2 कल्प के संगम पर आय फिर हम बच्चों को, जो उनके बच्चे बनते हैं और ब्राह्मण कहलाते हैं...; क्योंकि बच्चों ने समझाया है अच्छी तरह से कि परमपिता परमात्मा इस त्रिमूर्ति अर्थात् ब्रह्मा,विष्णु,शंकर... द्वारा ये–2 कर्तव्य कराते हैं। अभी ये भारत में ही चित्र है और ये भारत में ही समझना है। बाप भी भारत में आ करके समझाते हैं; क्योंकि बाप ने समझाया है कि दोनों का जन्म, परमपिता परमात्मा जिसको राम भी कहते हैं और फिर जो दुश्मन है जो फिर तुम्हारे से जीत पहन लेते हैं, राज्य छीन लेते हैं, वो रावण का भी जन्म यहीं है। अभी तुम्हारी बुद्धि में तो अच्छी तरह से है ना कि किसको राम कहा जाता है, किसको रावण कहा जाता है। अभी वो मनुष्य तो बंदर बुद्धि हैं, आसुरी बुद्धि हैं, पतित बुद्धि हैं। पतित बुद्धि तो लायक नहीं हैं देवता कहलाने के भी या ब्राह्मण कहलाने के भी; क्योंकि ब्राह्मणों के लिए भी तो गाया हुआ है कि ब्रह्मा के मुखवंशावली हैं। तो ऐसे नहीं कोई समझेंगे कि ब्राह्मण कोई पतित थे। जैसे ब्राह्मण पावन बनते हैं तो फिर ब्राह्मण ही देवता बनते हैं; क्योंकि ये जो

मुखवंशावली है इनको भ्रष्टाचारी नहीं कहेंगे। भ्रष्टाचार से नहीं पैदा हुआ है। बाप ने समझाया है कि ये मुनष्य जो विख से पैदा होते हैं उनको भ्रष्टाचारी कहा जाता है; परन्तु परमपिता परमात्मा (ने) तुमको ब्रह्मा के मुख से अपना बनाया है, एडॉप्ट किया है, फिर तुमको अभी कोई भ्रष्टाचारी जन्म नहीं कहेंगे। तुम्हारा पहला जन्म भ्रष्टाचारी ज़रूर है। अभी तुम्हारा जन्म भ्रष्टाचारी नहीं कहेंगे; क्योंकि ये जो तुम्हारा संगम का जन्म है उसको भ्रष्टाचारी नहीं कहेंगे; क्योंकि ब्रह्मा के मुख की वंशावली हो। तो ऐसे कहेंगे कि बरोबर ये हैं पतित; परन्तु इस समय में जो एडॉप्ट किए हुए हैं वो ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा। तो देखो, तुम्हारा जो भ्रष्टाचारी जन्म था वो जैसे कि ट्रान्सफर होता है श्रेष्ठाचारी में; क्योंकि ब्रह्मा के मुखवंशावली हो जाती हो। तो फिर तुम ब्राह्मणों को कोई ऐसे नहीं कहेंगे कि तुम विख से पैदा हुए। तुम पैदा हुए...। तो भ्रष्टाचारी अक्षर तुम्हारे से निकल जाता है फट से। फिर तुमको बैठ करके लायक बनाते हैं। कहाँ के लिए? बादशाही लेने के लिए। तो वास्तव में तुम्हारा यह पहला–2 मुखवंशावली जन्म बहुत ऊँच है। परमपिता परमात्मा पहले–2 ही आ करके ब्रह्मा द्वारा मुखवंशावली रचते हैं। तो मुखवंशावली को फिर भ्रष्टाचारी नहीं कहेंगे। वो जो भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं उनको भ्रष्टाचारी कहा जाता है। तो देखो, तुम फर्क हो गए ना। तुम ब्राह्मण बन गए। अगर तुम फिर जा करके कोई भ्रष्टाचार करो तो फिर तुमको भ्रष्टाचारी कहा जाता है। अभी तुमको तो भ्रष्टाचार करना नहीं है। जो ब्राह्मण होंगे वो फिर कभी भ्रष्टाचार नहीं करेंगे। ... तो कड़े अक्षर कहते हैं...। तो ये सभी राज़ समझाना होता है कि भारत ही श्रेष्ठाचारी, फिर रावण आ करके भारत को ही भ्रष्टाचारी बनाता है। तो इसलिए इस आधा समय को हैविन कहा जाता है भारत को। ऐसे मत समझो कि कोई दूसरे धर्म के लिए ये कथा है। ये कथा जो है सत्यनारायण की या अमर कथा, ये है ही भारत की कथा। भारत ही वाइसलेस, भारत ही विषियस। ऐसे अपन कहेंगे कि बरोबर माया का जन्म यहाँ हुआ है। जब माया का जन्म यहाँ हुआ है तब वहाँ फिर दूसरे धर्म की स्थापना होती है। तो ऐसे नहीं कहेंगे कि वो कोई विषियस है। उनमें पहले–2 उनकी आयु बहुत बड़ी होती है। वो इतना विकारी नहीं होते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि जब भारत विषियस बनता है, कोई दुनिया विषियस बनती है। दुनिया है ही कहाँ? ये जहाँ भारत है तो ये दुनिया का मालिक है ना, तब इनको मिलाकर कहा जाता है; परन्तु ऐसे नहीं समझना है कि जब इस्लामी या बौद्धी या क्रिश्चियन यहाँ आते हैं तो उनको कोई हम विषियस की कतार में रखेंगे। ये वाइसलेस भी भारत की कतार में है, तो विषियस भी भारत की कतार में है। वो तो पहले–2 सतोगुणी है ना। उनकी आयु पहले–2 बड़ी होती है। वो इतना विषियस नहीं होते हैं। उनकी आयु ऐसे ही सतोगुणी आयु, सतोप्रधान, फिर सतो, फिर रजो, फिर तमो। उनको भी ये है। तो कथा जो है विषियस और वाइसलेस, ये सारी भारत के ऊपर है। उन्हों को मालूम न होने कारण वो सारी दुनिया को कह देते हैं वाइसलेस वर्ल्ड, विषियस वर्ल्ड। अभी हम वाइसलेस कहते तो इनको हैं ना, इस भारत दुनिया को और विषियस भी पहले ये बनती है। उसके बाद उन लोगों का जन्म होता है। देखो, इस्लामी का भी, अब वहाँ...कितने मुनष्य होंगे! वहाँ तो इस्लामियों का जब धर्म स्थापक आवे तब एक–2 आहिस्ते–2...। देखो, झाड़ कितना आहिस्ते–2 बढ़ता है। कितनी मेहनत है! तो यहाँ मेहनत करनी पड़ती है। ये मेहनत यहाँ फलीभूत हो जाती है। सभी आत्माएँ वाइसलेस बन जाती हैं। यहाँ आत्माओं को वाइसलेस बनाना ये बहुत मेहनत है। वो जो धर्मस्थापक आते हैं उनको कोई बैठ करके वाइसलेस थोड़े ही बनाना पड़ता है। वो तो धर्म स्थापन कर देते हैं। ये तो बड़ी मेहनत है। मेहनत है तब तो उनको बुलाते हैं ना। क्राइस्ट को बुलाकर क्या करेंगे! हम दूसरे कोई भी धर्म स्थापन करने वाले को बुलाकर क्या करेंगे; क्योंकि बुलाते ही हैं आदि सनातन देवी–देवता धर्म के। अभी देखो कितने विद्वान,आचार्य,पण्डित हैं। तो उनको तुम पत्थरबुद्धि फट से कह सकते हो ना, कोई भी हो; क्योंकि गॉड फादर कहा जाता है। गॉड को फादर कहा जाता है और उनको फिर पतित–पावन भी कहा जाता है। अगर सर्वव्यापी कर दिया तो फिर अक्षर उनके लिए, उनकी कोई महिमा ही नहीं रहती है। पतित–पावन है, लिबरेटर है, ज्ञान का सागर है, सुख का सागर है, शांति का सागर है, आनंद का सागर है। फिर ये जो उनके टाइटिल्स हैं, वो

सभी वो लोग गुम कर देते हैं, जो सर्वव्यापी कह देते हैं। तो देखो, सर्वव्यापी–2 कहते आते हैं और गिरते ही जाते हैं। तो कह सकते हैं ना– ईश्वर को सर्वव्यापी कहने वाले दुर्गति को पाते हैं और ईश्वर को फादर मानने से सद्गति पाते हैं; क्योंकि फादर से वर्सा मिल जाता है। ... हैविनली गॉड फादर से कौन–सा वर्सा मिलता है ? हैविन का। सो देखो, हैविन का वर्सा था। भारत को जब हैविन का वर्सा था तब और तो कोई दुनिया में था ही नहीं। ये तो तुम बच्चों की बुद्धि में है ना। तो बुद्धि में जो चीज़ होती है, औरों को समझाया जाता है। जैसे रात को तुमने देखा कि उसने समझाया। अभी वो नया है। ये श्यामकिशोरी कोई पुराना नहीं है। ये तो नया आया हुआ है सो भी बीमार रहा है तो अटेन्शन नहीं दिया है इतना। इतने सर्विस में तीखे नहीं हैं तो भी कुछ न कुछ अच्छी तरह से समझाय सकते हैं; परन्तु नहीं, समझाने की मार्जिन और है जास्ती। तो क्या करना चाहिए? जब देखें कि यहाँ ऐसे–2 समझने वाले हैं तो जो और भी अच्छा होवे उनको बुला देना चाहिए कि अच्छा, एक को, दो को, चार को, पाँच को...। वो फिर भी तो पादरी है ना, वो समझेगा तो औरों को भी समझाएँगे। उनकी बुद्धि उनको खाएगी कि अभी तो मुझे कोई क्राइस्ट को थोड़े ही याद करना है। क्राइस्ट तो पुनर्जन्म में आ गया। अभी क्राइस्ट का भी तो पिछाड़ी का जन्म है। बहुत जन्म के अंत के अंत का जन्म है। तो जब ऐसे मौका मिलता है तो फिर जो अपन से होशियार...। वो फिर देह–अभिमान नहीं रखना चाहिए। फिर अपन से जो होशियार हैं उनको बुला देना चाहिए कि एक/दो रोज़ के लिए आ जाओ। तो ये पादरी एक नहीं है, फिर दूसरा, तीसरा उनको समझावें। ...नन्स को भी समझा सकते हैं कि तुम लोग नन का अर्थ नहीं जानते हो। नन का अर्थ ही है कि नन बट वन को याद करना है। वन तो सबका एक ही है। तुम क्राइस्ट को अगर बैठकर याद करती हो तो उनसे तुमको क्या मिल सकता है ? तुमको कुछ भी नहीं मिल सकेगा। देखो, कुछ मिला है भला ? ये जो क्रिश्चयन धर्म है, क्या मिला है? ये आपस में लड़ते रहते हैं, झगड़ते रहते हैं। क्या मिल सकता है! देखो, हम अभी किससे लड़ते–झगड़ते कुछ नहीं। हम विकार में ही नहीं जाते हैं। हम सबको बाप का परिचय देते हैं कि इनहेरिटेन्स तो उनसे मिले। नन बट वन से इनहेरिटेन्स मिलेगा। काहे का? शांति का और सुख का; क्योंकि वो शांति का सागर है और कहा भी जाता है लव का भी सागर है। वो सब सागर। ज्ञान का भी ओशन है, लव का भी ओशन है, वो लोग ऐसे मानते हैं। शांति का भी ओशन है। तो सब जब उनकी महिमा होती है तो तुम लोग क्राइस्ट को क्यों याद करते हो? देखो, हम कोई भी देवताओं को याद नहीं करते हैं। वो लक्ष्मी–नारायण जो हैविन के मालिक हैं उनको याद करना... क्योंकि वो भी तो पुनर्जन्म लेते–3 हेल को आ करके पहुँचे हैं। ये 84 जन्म का हिसाब भी तो ; क्योंकि सामने बहुत चित्र है ना अच्छी तरह से किसको भी समझाने का। तो उनको पकड़ करके अच्छी तरह से उनसे भी लिखवाय लेना चाहिए कि लिबरेटर वा हैविनली गॉड फादर कौन है। तो जब हैविनली गॉड फादर वो है तो उनको सर्वव्यापी कैसे कह सकते हैं? चलो, वो आ करके भारत को हैविन का वर्सा देते हैं। तो उनको भी ये जो सर्वव्यापी का बुद्धि में ठूँसा हुआ है ना। ओमनीप्रेजेंट(सर्वव्यापी)...ओमनीसेन्ट(सर्वज्ञ), ओमनीपोटेन्ट(सर्वशक्तिमान), ऐसे कहते हैं ना। तो जब कोई चान्स मिलती है तो ऐसे आधा में नहीं छोड़ देना चाहिए, बुलाना चाहिए; परन्तु नहीं, इनमें होता है अहंकार, थोड़ा भी समझाया, कोई खुश हुआ तो बस फिर तो हम ही समझानी....। उस समय में ये समझना चाहिए कि नहीं, हम फलाने को बुला देवें, फलानी को बुला देवें कोई तीखी होवे तो; क्योंकि फिर भी फिमेल जब समझाती है तब वो लोग और जास्ती कद्र रखेंगे; क्योंकि आजकल फिमेल का कद्र बहुत है; परन्तु वो बुद्धि, देही–अभिमानी की न रहने के कारण फिर ऐसे–2 भी चित्र छूट जाते हैं। जैसे लिखता है आर्यसमाजी को भी हमने समझाया। तो बाप के लिए किसको भी बिल्कुल अच्छी तरह से समझाय सकते हो। बाप का सिर्फ परिचय देना है कि वो तो ब्लिसफुल है ना। उसको कहा जाता है वो तो रहमदिल है और वो तो पतित–पावन है। तो ज़रूर वो पतित दुनिया को पावन किसने बनाया होगा, कैसे बनाते हैं, वो समझना

चाहिए ना। वो तो मशहूर है...भगवानुवाच! तुम मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म सब विनाश हो जाएँगे; क्योंकि सर्वशक्तिवान है। कृष्ण को सर्वशक्तिवान तो नहीं कहेंगे। आर्यसमाजी और भी देवताओं को नहीं मानते। वो तो और ही शिव को मानेंगे। तो उनको और ही पिता का परिचय देने से और फिर रचना का परिचय देने से...। पीछे सभी नहीं कुछ अच्छे बन जाते हैं। वो तो उनको भी कह देंगे, कोई जाकर कहेंगे– नहीं, ब्रह्माकुमारियों का तो ज्ञान बड़ा अच्छा है, तो बोलेंगे तुमको जादू लगा है। जब तलक कि वो अच्छी तरह से आ करके ब्रह्माकुमार या कुमारी बन न जाए, उनका कोई अच्छा बड़ा लीडर...। देखो, जैसे लड़ाई का मैदान होता है तो कोई मेज़र, कोई कमाण्डर पकड़ा जाता है तो लड़ाई में हाहाकार मच जाता है। बाकी सिपाही तो कितने छोटे–2 ओहदे वाले तो मरते ही रहते हैं। तो कोशिश करके.....। सिंधी में कहते हैं– भले मीर मार करके आए हैं। वो तो बिचारियाँ बहुत हैं; परन्तु जबकि... तो नाम होगा ना...। तो वो आ करके फिर जो दूसरे को बैठ करके समझाएँगे कि हम आर्यसमाजी थे और उनमें कुछ भी नहीं है। ये जो ज्ञान देते हैं वो यथार्थ है और ये बरोबर है इनको परमपिता परमात्मा जो ज्ञान का सागर है, जिनकी ये अभी जयन्ती मना रहे हैं, ये बरोबर इनको वही ज्ञान देते हैं; क्योंकि समझाना तो पड़ता है ना। भले वो भी होवे तो भी उनको समझाना है ना। तो ये मनुष्य सृष्टि का सीड(बीज) तो इनकारपोरियल गॉड फादर है ना। सो भी इनकारपोरियल है ना और इनकारपोरियल ही जानते हैं, नॉलेजफुल है। इनकारपोरियल शिव है जिसको सुप्रीम सोल कहते जाते हैं। उनको कहा जाता है नॉलेजफुल है। तो नॉलेजफुल है तो चैतन्य है, उसमें कोई नॉलेज है ना। तो वो जो बीज है उनमें क्या नॉलेज होगी? ज़रूर अपने झाड़ के उत्पत्ति,पालन,संहार की नॉलेज होगी। तो वही नॉलेज दे सकते हैं, और तो कोई दे नहीं सकते हैं ना; क्योंकि उनको ही कहा जाता है नॉलेजफुल और सो भी स्प्रिच्युअल नॉलेजफुल, रूहानी बाप। ये हैं ज़िस्मानी। ये तो किताब पढ़ने वाले हैं। वो क्या किताब पढ़ते हैं जिसके लिए कहा जाता है कि वो आ करके सभी वेदों,ग्रंथों,शास्त्रों का...। किसके लिए कहा जाता है? कृष्ण के लिए तो बाप समझाते हैं, वो तो है सतयुग का शाहजादा। वहाँ तो ये नॉलेज ही नहीं है, भक्ति ही नहीं है। गायन तो उनका है ना– नॉलेजफुल। उन्होंने वो विष्णु के नाभी कमल से निकाल दिया है और फिर कहते हैं कि परमात्मा ब्रह्मा द्वारा...। अभी विष्णु तो ब्रह्मा द्वारा नहीं समझाते हैं; क्योंकि नॉलेजफुल विष्णु को नहीं कहा जाता है। नॉलेजफुल भगवान को कहा जाता है, फादर को कहा जाता है। वो बैठ करके सभी वेदों,ग्रंथों,शास्त्रों का सार समझाएँगे। विष्णु तो सूक्ष्मवतन में दिखलाते हैं। सूक्ष्मवतन में इस नॉलेज की तो कोई बात ही नहीं है। यह नॉलेज तो यहाँ लेनी है, पद तो यहाँ पाना है। अभी ये तो थोड़ी डिफीकल्ट बातें हैं, जो बाप बैठ करके समझाते हैं जो मोटी बुद्धि तो नहीं समझ सके। बाप समझाते हैं सिवाय बाप के ज्ञान का सागर और किसको भी नहीं कहा जा सकता है। तो ज़रूर ज्ञान है उनमें, चैतन्य है, तो कौन–सी नॉलेज है उनमें? उनमें सृष्टि के आदि,मध्य,अंत की नॉलेज है; क्योंकि पहले–2 फाउण्डेशन तो वो डालते हैं ना। जैसे ये झाड़ निकालते हैं। ये क्रिसमस झाड़ है ना। तो अभी क्रिसमस झाड़ कोई अलग थोड़े ही है। ये एक ब्रांच है। वो खुद नहीं समझते हैं कुछ इतना। बस, वो समझते हैं कि हम क्राइस्ट का जो झाड़ है वो झाड़ बनाकर... वो लोग क्रिसमस ट्री बनाते हैं। तो क्रिसमस ट्री कोई अलग तो नहीं है ना। वो तो एक ब्रांच है। तो ब्रांच को थोड़े ही... उनके आगे भी तो फाउण्डेशन है ना। तो ये फाउण्डेशन किसने डाला? वो किसको भी मालूम नहीं है कि भारत में आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना किसने की है। ये बाप ने की है और उसके बदली में कोई का भी नाम ठीक नहीं रहता है। कृष्ण ने भी कौन–सा धर्म स्थापन किया? वो भी कह देते हैं हिन्दू धर्म। अभी हिन्दू धर्म तो कोई बात ही नहीं है। ये तो आदि सनातन धर्म है। तो आदि सनातन धर्म वालों को भी अगर ये लोग पकड़ें। बाबा इशारा तो बहुत दफा देते रहते हैं; क्योंकि उनकी भी सब दुकानें निकलती हैं। तो उनको समझाना चाहिए कि आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। आदि सनातन कोई हिन्दू

धर्म थोड़े ही था, जो हिन्दू महासभा–हिन्दू महासभा–हिन्दू महासभा कहते हैं। हिन्दुस्तान की तो बहुत बड़ी सभा है। हिन्दुस्तान में तो 40 करोड़ बोलते हैं। भई, कितना बोलते हैं? हिन्दुओं की 40 करोड़ों की सभा है। हिन्दू, हिन्दुस्तान है ना, इनकी सभा है। ये आदि सनातन कोई हिन्दू सभा तो नहीं है ना। तो उनको तो बहुत अच्छा समझाय सकते हैं; परन्तु वो अटेन्शन नहीं जाता है। जहाँ कोई चान्स मिले या जा करके....हिन्दू महासभा के प्रेसिडेन्ट और उनकी भी कोई बड़ी–2 सोसाइटी होगी तो उनको बोला ना कि आदि सनातन ये हिन्दू महासभा नहीं है, ये तो यहाँ आदि सनातन देवी–देवताओं की सभा थी। आदि सनातन सतयुग में कोई हिन्दुओं की सभा नहीं थी। वो आदि सनातन देवी–देवताओं की सभा जिसको कहा ही जाता है ; क्योंकि वहाँ भी सभा लगती है ना। देखो, कितने राजाएँ होंगे, उनकी सभा लगती होगी ना। जैसे यहाँ भी राजाएँ थे ना तो उनको कहा ही जाता है प्रिन्सेस चेम्बर्स। यहाँ राजाओं को प्रिन्स भी कहते थे। इनकी सभा लगती थी तो उनको प्रिन्सेस चेम्बर्स कहते थे। कोई छोटे बच्चों की चेम्बर नहीं लगती है। लगती है राजाओं की चेम्बर, पर उनको नाम रख दिया था कि भारत के प्रिन्सेस चेम्बर यानी शहजादे। अभी शहजादे तो नहीं थे ना; परन्तु क्या करें, यह अक्ल तो है नहीं कि प्रिन्सेस चेम्बर लगती नहीं है, इनको महाराजा की चेम्बर्स कहें। तो वैसे ही कहेंगे कि यहाँ तो सतयुग आ०स०दे०देवताओं की, इन पवित्र महाराजा–महारानियों की चेम्बर्स लगती थी। लक्ष्मी–नारायण कोई एक तो नहीं था ना। बहुत होंगे ना। तो उनकी भी तो सभा लगती होगी ना; किन्तु मनुष्यों को तो कुछ पता ही नहीं पड़ता है। वो इतना ही नहीं समझते हैं कि सतयुग में श्री लक्ष्मी–नारायण का राज्य होगा तो दूसरे भी तो होंगे ना। सभा होगी, ज़रूर बच्चे पैदा हुए होंगे, जुदा–2 राजाई सबको मिली होगी। डिनायस्टी माना ही फिर उनकी जुदा–2 राजाई बन जाती है। नाम लिया जाता है सिर्फ सूर्यवंशी डिनायस्टी। जैसे मुसलमानों की डिनायस्टी यहाँ हो गई है ना। तो देखो, उनके फिर बच्चे की भी तो गाई जाती है ना। कोई एक राजा थोड़े ही होता है। उनका भाई, भतीजा, फलाना। पर जिसमें पावर है वो राजा बनकर बैठते थे। तो देखो, तुमको सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत, हू इज़ हू, कौन–2, कब–2, कितना–2 राज्य करके गए हैं, ये तुमको बाप बैठ करके जो है रूहानी ज्ञान सागर...। उसको कहा ही जाना चाहिए रूहानी ज्ञान सागर यानी रूह जो है उनमें ये ज्ञान है, जो आ करके हम रूहों को समझाते हैं और वो रूहों से ही आ करके बात करते हैं; क्योंकि वो जिस्म से बात नहीं करते हैं। उनमें तो अक्ल है ना कि जिस्म कोई थोड़े ही सुनता है, रूह सुनती है इन ऑरगन्स द्वारा। ये मनुष्यों को थोड़े ही कुछ ज्ञान है। पाई का भी ज्ञान नहीं है। इसलिए इसको कहा ही जाता है स्प्रिचुअल नॉलेज यानी रूहानी नॉलेज। रूहानी नॉलेज कौन? <u>रूहानी नॉलेज है सुप्रीम।</u> कोई उनको शरीर थोड़े ही है। बाप खुद बैठ करके समझाते हैं ना कि मेरे को शरीर थोड़े ही है। मेरे को कैसे कहते हैं इनमें नॉलेज है यानी संस्कार नॉलेज का है इस शिव (में) जो आत्मा है? तो इससे सिद्ध होता है कि आत्मा चैतन्य है, उनमें ही संस्कार रहते हैं। जैसे कि हमारे बाप में, शिवबाबा में कितने संस्कार हैं! सारा यह जो कल्पवृक्ष, सारी सृष्टि, उनके आदि,मध्य,अंत का ज्ञान है। तो किसमें ज्ञान है ? जिसमें ज्ञान है वो आ करके फिर भी तो आत्माओं को, अपने बच्चों को ज्ञान देंगे ना। तो अभी देखो, अपने बच्चों को ज्ञान दे रहे हैं। वो जानते हैं कि बरोबर हम भी ज्ञान देंगे तो ऑरगन्स चाहिए। तो बोलता है– देखो, मुझे भी जब ज्ञान देना है, तो मेरे में ज्ञान है, ये सभी वेदों–शास्त्रों का सार मेरे में भरा हुआ है; पर मेरे में भरा हुआ है ना, आत्मा कहती है ना। बाप भी कहेंगे मेरे में भरा हुआ है। मैं क्या करता हूँ वो ज्ञान? इस शरीर द्वारा तुम बच्चों को देता हूँ। यानी ऑरगन्स बिगर हम ज्ञान कैसे दे सकते हैं? तो देखो, इसलिए यहाँ गाया हुआ है...अभी वही प्रैक्टिकल टाइम है– शिवजयन्ती। मैं क्या आकर करता हूँ? मैं आ करके इनको जो मेरे में ज्ञान है सृष्टि की रचना, आदि,मध्य,अंत का, वो मैं बैठ करके इनको दे रहा हूँ, जैसे कल्प पहले दिया था। तो इनको राजयोग भी सिखलाता हूँ। कैसे? सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का राज़ समझा करके और फिर इनको

पवित्र बनने के लिए कहता हूँ– अभी मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बनेंगे; क्योंकि मैं सर्वशक्तिवान हूँ। मेरे पास आना भी है। मेरे साथ योग लगाने से तुम पवित्र हो जाएँगे। तो बाप (ने) आ करके समझाया कि मेरे से योग लगाने से मैं गारंटी करता हूँ तुम पावन बन जाएँगे; क्योंकि मैं जो हूँ, मेरे से वही मिलेगा ना। तो तुम पावन बन जाएँगे। फिर प्यार का सागर बन जाएँगे। सबका सागर बन जाएँगे ना। गाया जाता है ना– ओशन ऑफ लव। अंग्रेजी में कहा जाता है ना। तो देखो, तुमको भी अभी मास्टर ओशन ऑफ लव कहेंगे। आपस में झगड़ा–वगड़ा तो नहीं करना चाहिए ना। प्यार होना चाहिए ना। तभी तो बाबा समझाते रहते हैं ना– तुम जब कहते हो कि गॉड फादर जो ओशन है यानी प्यार का सागर है और तुम नदियाँ हो तो तुम भी तो प्यार की नदियाँ होनी चाहिए ना। जैसे वो पानी है और नदी है। तो जैसे वो सागर है, वो भी नदी है। तो उनसे निकली हुई ऐसे ही है ना, जो उसमें स्नान करते हैं। तो तुम हो ज्ञान का सागर, जो बिल्कुल ही लव का ओशन है, उनसे ये तुम निकली हो, वो भी तो लव का ओशन चाहिए ना। ...ओशन तो तुमको नहीं कहेंगे, फिर तुमको कहेंगे नदियाँ। तो ज्ञान की भी नदियाँ हो तो लव की भी नदियाँ बनना चाहिए ना। कहाँ है तुम्हारे में लव बहुतों को? हाँ, थोड़ा–2 सीखती हो नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार। लव तो सच्चा लव रखना चाहिए ना। ऐसे नहीं कि बाहर से मीठा बोलना, अंदर में कड़ुआ रहना कद्दू के मुआफिक। यहाँ तो बहुतों की ये आदत है ना। ये तुम खुद जानती हो अच्छी तरह से, बाबा जिसको लव का सागर कहा जाता है, वैसे हम भी जो उनसे निकली हुई नदियाँ हैं, हमको भी तो एक/दो में लव होना चाहिए ना। दूसरे को तो छोड़ो, पर तुम्हारे में एक/दो में भी लव नहीं है। तो देखो, तुम विघ्न कर्ता बन गई ना। तुम हो तो बहुत ही सबकी विघ्नहर्ता ; परन्तु नहीं, तुम विघ्न कर्ता बन पड़ी हो। बाप खुद कहते हैं तुम बच्चों को कि मेरे से निकले हुए, जिसको कहा जाता है ओशन ऑफ लव, उनसे निकली हुई, तुम्हारे में लव कहाँ है? तुम तो सारा दिन कोई न कोई बात के ऊपर लड़ती–झगड़ती हो, लव कहाँ है तुम्हारे में? गाया जाता है कि बरोबर जनावरों का भी लव था। तुम तो मनुष्य होकर भी यहाँ एक/दो को लव नहीं करती हो। तो बाप डुरापा भी तो देंगे ना कि तुमको ये क्या पड़ी है! बाबा सदैव कहते हैं– बच्चे, एक/दो को प्यार करो। एक/दो को सुख दो। सुख देंगी तो इतना वर्सा पाएँगी। नहीं तो फिर बाप कहते हैं सुख न देंगी, एक/दो को प्यार न करेंगी, लड़ती रहेंगी तो फिर दुःखी होकर मरेंगी, पद भी भ्रष्ट हो जाएगा। बाप तो बहुत अच्छी तरह से बैठ करके समझाते हैं। तो नाम भी बाला करती हो। समझा ना। थोड़ी–2 सी बात के ऊपर... फिर ये तो बाप कहते हैं कि क्या करें, तुम जानते हो स्कूल के बच्चे हैं कि बरोबर जिसमें लव नहीं है वो पिछाड़ी में ही जाएगा। उनकी शिकल ही बिल्कुल ही जैसे भूतनाथ की हो जाती है। जो लव नहीं करते हैं ना। लव के अगेन्स्ट है गुस्सा। तो गुस्से वाली की शिकल में तो भूत झट प्रवेश कर देते हैं। जिसकी शिकल लवली होती है, बड़ा हर्षित रहते हैं, बड़ी मीठी बातचीत करते हैं। तुम देखती भी हो कैसे बच्चे आते हैं, कितने लव से बात करते हैं। सेन्टर्स में भी बड़े लव से बात करते हैं। जो लव से नहीं करते हैं फिर उनको हम कह देते हैं कि ये तो आसुरी सम्प्रदाय है। ये दैवी सम्प्रदाय है। वो रावण से निकली हुई नदियाँ हैं और ये तो ज्ञान सागर से निकली हुई हैं। फर्क झट देखने में आ जाता है। तभी बाप भी समझाते रहते हैं– मीठे–2 बच्चों, जब बाप है ओशन ऑफ लव, तो तुमको भी तो ऐसा बनना चाहिए ना। एक/दो में प्यार (हो) तो कोई आ करके देखे कि कितना इनका प्यार है आपस में। बाहर वाले भी कोई आवे और देखे कि एक/दो को प्यार नहीं करते हैं, बोलते हैं तुम प्यार के सागर के बच्चे हो करके ये ऐसी–2 बातें तुम बोलती हो। कोई यहाँ वाली ही सब ऐसे उनको समझावे (तो) बोले कमाल है! बाबा के पास तो एकदम बहुत लवली चिल्ड्रेन है। उनको कहा ही जाता है लवली चिल्ड्रन। जो अच्छे होते हैं। जब भी कोई बच्चे (जब) कोई बाहर वाले आते हैं (तो) जाकर अच्छा टिकलू–2 करती हैं, तो कहते हैं व्हॉट लवली चिल्ड्रन! और कोई उस समय में चम–चा करके रोते हैं तो

उनको थोड़े ही कहेंगे व्हॉट लवली चिल्ड्रन। वो तो हैं ही अन लवली।... अन लवली माना उनको प्यार ही कौन करेंगे! देखो, जो लवली बच्चे भी होते हैं तो सब कोई गोद में उठाते हैं, प्यार करते हैं। देखते हैं इतना रोते हैं, शिकल भद्दी कर देते हैं...तो कोई उठाने (की) भी दिल नहीं करते हैं। ऐसे है बरोबर। तुम बच्चे तो बड़े हो, तुम छोटे तो नहीं हो। तुम बच्चों को भी तो... परन्तु भूल जाते हैं कि हम किसके बच्चे हैं। मुसीबत तो बड़ी ही है! हम बाप के बच्चे हैं, बाप से वर्सा ले रहे हैं, वो याद ही नहीं है। तो फिर वही पुरानी देह–अभिमान आ जाता है। वो पुरानी आसुरी रसम चल जाती है। बाप समझाते भी हैं किसको समझाना है, कैसे समझाते हैं। और समझाते हैं या बाप समझाते हैं। किसको भी समझाओ और उनको बाप का परिचय दे दो कि दूसरे को क्यों याद करना चाहिए! वर्सा बाप का है। उनकी ये–2 महिमा है। तो उनसे तुम वर्सा पा सकते हो ना। सबसे अच्छा जो है उनसे गुण उठाना चाहिए। मनुष्य एक/दो को कहते हैं ना (कि) गुण उठाओ। उनमें तो है ही गुण। उनमें तो कोई अवगुण है नहीं। तो गुण उठाने के लिए, गुणवान बनाने के लिए, सर्वगुण सम्पन्न बनाने के लिए ही तो बाप आते हैं ना। तो बच्चों को भी सर्वगुण सम्पन्न कोशिश करके अच्छा गुण धारण करना चाहिए। चेहरा भी रमणीक होना चाहिए। मुरझाया हुआ मुर्दे जैसा चेहरा तो नहीं होना चाहिए ना। अभी तुम्हारा चेहरा खिलना चाहिए। साजन भी देखो तुमको कैसा मिला है! तुम तो ये जानते हो कि हमको एकदम इस जैसा ही चेहरा बनना है। तो यहाँ चेहरा भी तो ऐसा चाहिए ना। चेहरे के ऊपर भी देखो, किसका खुशनुमा, तुम कहती हो ये आई है तो इनका मुँह तो देखो, ये चेहरा ही कैसा है, जैसे कि गुस्सी–2 देखने में आती है। कोई से दिल ना... । ऐसे भी आते हैं ना। तुम वर्णन करते हो; परन्तु दूसरे का वर्णन करने के बदले पहले अपन को तो देखना चाहिए ना। ऐसे तो नहीं समझना चाहिए उन नारद के मुआफिक (कि) मैं लक्ष्मी को वर सकता हूँ। पहले अपने लक्षण तो देखो ना। पीछे तुम अपनी दिल से पूछो कि तुम लवली बने हो। ऐसे मीठे, लवली दूसरे को बनाते हो। तो बाबा लवली बनाते हैं ना। देखो, कितना लवली बनाते हैं। काफिरस्तान से हमको परिस्तानी बनाते हैं। मुसलमान हिन्दुओं को काफिरस्तान कहते हैं, काफिर कहते हैं। तो काफिरस्तानी से हमको परिस्तानी बनाते हैं। फर्क तो है ना। बरोबर ये काफिर कहते भी हैं जिनको अपने कोई धर्म का पता नहीं है। ये खुश होते हैं। धर्म का पता नहीं है उसको ही ये खुश समझते हैं कि हम धर्म को मानते ही नहीं हैं। ...धर्म को माने भी कैसे जबकि धर्म का पता ही नहीं, तो माने धूर। किसको भी भारतवासियों को कोई अपने धर्म का पता नहीं है कि हम कोई आदि सनातन देवी–देवता धर्म के हैं। तो फिर इनका कोई धर्म है ही नहीं तो रखे ही क्या धर्म! तो फिर सबको भी वही बताते रहते हैं कि हमारा धर्म कोई नहीं है। हम धर्म को नहीं मानते हैं; इसलिए हमारे पास जो भी धर्म वाले आए, रह सकते हैं। हमारी कोई से भी दुश्मनी नहीं है...। ये कहते हैं मैजारिटी और मैनारिटी। अरे, ऐसे भी बहुत हैं। रशिया में देखो कितने मुसलमान हैं! है ना वो ताशकन्द। उसमें भी तो मुसलमान हैं ना। उनकी भी जात मुसलमान की है। वो क्रिश्चियन हैं, वो मुसलमान हैं। फिर वो भी उनसे लड़े कि हमको भी अपना हक दो कि हम भी राज्य करें। ऐसे तो फिर ढेर के ढेर राज्य हो जावें। मुसलमान यहाँ तो बहुत ढेर हो जावें। वो बोले हम तो गुजराती हैं...हम तो सिक्ख हैं, फलाने हैं, तो हमको भी तुम्हारे राज्य का दो। सब माँगते रहते हैं ना; क्योंकि धर्म में कौन कुछ पता ही नहीं पड़ता है किसको भी। नहीं तो हर एक धर्म वाले आपस में भाई–2 हैं। तो आपस में झगड़ना नहीं, दूसरे के शहर पर भी चढ़ाई नहीं करनी चाहिए; परन्तु नहीं, ये रावण का राज्य होने कारण एक/दो को दुःख तो देना ही है ज़रूर; क्योंकि रावण के राज्य में गाया ही हुआ है कि ये है दुःखधाम। दुःखधाम किसने बनाया है, मनुष्य तो नहीं जानते हैं ना। विद्वान,आचार्य,पण्डित तो नहीं जानते हैं कि भारत को दुःखधाम कितना(किसने) बनाया। भारत जो इतना सुखधाम था। सुखधाम किसने बनाया, दुःखधाम किसने बनाया, फिर दुखधाम को सुखधाम कैसे बनाया जाता है, हिस्ट्री कैसे रिपीट करते हैं सो तो तुम बच्चे जानते हो। अभी हिस्ट्री को जानते

हो, बाकी फिर दैवीगुण धारण नहीं करते हो, जो वहाँ अच्छा पद पाय सको। नहीं तो लज्जा होना चाहिए। स्कूल में पिछाड़ी में जो बच्चे बैठते हैं उनके मात–(पिता) जो आकर देखें कि हमारे बच्चे यहीं पड़े हैं तो उनको लज्जा आ जाती है और जो छोकरे होते हैं ना, पिछाड़ी में बैठते हैं, उनको भी लज्जा आती है। कोशिश करते हैं; परन्तु मैनर्स नहीं हैं तो पढ़ें कैसे! पढ़ाई तब हो जब जाकर घर में भी पढ़ें। घर में भी ठिक्कर–ठोबर खाएँगे, लड़ेंगे–झगड़ेंगे तो फिर वो ऊपर में कैसे जाएँगे। फिर देखो उनके मास्टर, उनके बाप और वो खुद समझ लेते हैं कि हम नापास हो जाएँगे या थोड़े मार्क्स से पास हो जाएँगे। यहाँ तो ये समझते हैं अगर हम नापास हो जाएँगे तो देखो...। श्रीरामचंद्र वो भी नापास हुआ तो देखो चंद्रवंशी में आ गया। सो भी अच्छा राजा बना। फिर देखो यहाँ कितने नापास होते हैं, जो जा करके प्रजा में बनते हैं। कितना बड़ा स्कूल है! स्कूल तो देखो कितना बड़ा है! कितना बड़ा बन जाएगा। दिन–प्रतिदिन ये बड़ा बनता जाएगा। जितना–2 वृद्धि को पाएगा इतना–2 सबको होगा कि वाह! ऐसी तो यूनिवर्सिटी खोलनी चाहिए; क्योंकि ये बाप ने समझाया है ना, बच्चों ने भी समझा है कि ये यूनिवर्सिटी कम हॉस्पिटल है। तो जैसे–2 कोई समझते हैं– वाह! इसमें तो मनुष्य हमेशा के लिए निरोगी बन जाते हैं, हमेशा के लिए साहूकार बन जाते हैं। बाबा ने समझाया है ना कि ये पढ़ाई भी सोर्स ऑफ इनकम है। ये बड़ी कॉलेज है। इनमें तो एकदम बड़ा पद पाते हैं। इसमें महाराजा, विश्व का मालिक बन जाते हैं। तो पढ़ाई को भी अच्छी तरह से अटेंशन देना चाहिए। ऐसे नहीं है कि बस, हम किचन में हैं तो किचन में हैं। हम पढ़ाई नहीं पढ़ सकती हैं। नहीं–2। इसको भी कहेंगे कि बिचारे की तकदीर में नहीं है। दोनों काम कर सकते हैं। बाबा मिसाल भी देते हैं बरोबर कि सिंध में ये हेमराज था, ये चिदाकाशियों का गुरू। देखो, एक वो परमानंद था। वो बावर्ची था। खाना पकाता था और उनसे ज्ञान भी सुनता था। तो अटेन्शन ज्ञान में जास्ती देता था। बाकी कर्म तो सबको ही करना है ना। कोई धंधा–धोरी करता था। ये भण्डारे का काम करता था। तो इतना भण्डारी से वो सीखा जो सबसे अच्छा उनका फेवरेट बन गया। वो बच्चों को नहीं देता था, उनको देता था। तो देखो, पिछाड़ी में गद्दी उनको देकर गया। वो आपस में पीछे लड़ते रहे, मरते रहे। तो हो सकता है ना। बाप तो इन्स्टैन्स(उदाहरण) भी बताते हैं ना; क्योंकि सिर्फ कोई गारंटी करके उठाया है क्या कि मुझे किचन में ही काम करना है। काम तो सबको करना है। पढ़ना तो सबको एक घण्टा लगता है, आधा घण्टा लगता है। बाकी तो सब धंधेधोरी में लग जाते हैं। तो क्यों नहीं आ करके हम अपना कुछ ऊँचा पद पावें। अरे, भण्डारी हो करके भी कोई आवे और उनको आ करके थोड़ा समझावे (तो) बोले– ओहो हो! इसका भण्डारी भी इतना ज्ञानी तू आत्मा! तो नाम बाला करेगा ना। कोई भी होवे, छोटा हो, तभी तो बाबा कहते हैं ना– देखो, ये वीणा है, ये अच्छी बच्ची है, पढ़ने में होशियार है। अगर आकर ज्ञान लेवे और टिकलू–2 करे। जैसे छोटी–2 बच्चियाँ देखो यहाँ आकर कुछ न कुछ सीखती तो हैं ना। कुछ न कुछ बुद्धि में बैठा है। ये कुछ भी बुद्धि में नहीं है एकदम तो उनको कोशिश करवानी चाहिए। बहनों को कोशिश करवानी चाहिए; क्योंकि एक/दो के ऊपर प्यार दृष्टि चाहिए (कि) ये भी अपना पद पा लेवे; क्योंकि बहन और भाई हो ना। तुम्हारा दूसरा तो कोई संबंध है नहीं। तुम्हारा है बहन और भाइयों का संबंध। तो बहन जो बड़ी होती है वो छोटी को उठाती है कुछ अच्छा बनाने के लिए। भाई जो होता है तो छोटा भाई (को) देखते हैं कि बिगड़ते हैं तो उनको उठाते रहते हैं। तो तुम अपना बहन और भाई का भी जो संबंध है, कायदा है, वो भी अमल में नहीं ला सकते हो; क्योंकि अज्ञान भरा हुआ है। और ही झगड़ते–लड़ते हैं। बाप तो बच्चों को सब कुछ अच्छी तरह से समझाते रहते हैं। नॉलेज भी देते हैं। कैसे नॉलेज देनी चाहिए दूसरों को भी... परन्तु क्या करें। देखो बाबा कहते हैं मैं तो दूँ; परन्तु लॉ नहीं कहता है मुझे जाकर सबसे बात करना या कोई से भी। जबकि मैं(ने) बच्चों को होशियार किया है तो बच्चों का काम है जाकर सर्विस करना। ये कायदा भी ऐसे कहते हैं– फादर शोज़ सन। फिर सन को फादर क्या समझाते हैं, वो जाकर दूसरों को

समझाना है। कौन–सा फादर? शिवबाबा। तो अभी शिवबाबा का कम्बाइण्ड रथ है ना। तो वो समझ जाएगा कि हम शिवबाबा से पूछें। उनसे घड़ी–2 उल्टी–सुल्टी बातें पूछेंगे वो तो बिल्कुल ही कायदे के विरुद्ध है। नए आदमी के सामने...। वो कहते हैं मैं अपने बच्चों से ही मिलता–जुलता हूँ, उनको समझाता हूँ। बाहर वालों से मेरा कोई कनेक्शन ही नहीं है। कायदे भी तो रखने होते हैं ना। बाकी तो सब बच्चे ही बच्चे हैं। ये तो रथ है ना। ये तो झट इन शिवबाबा से बात करना शुरू कर देंगे। बाकी दूसरा कोई से भी ऐसे बात नहीं करेंगे। भले मम्मा होगी तो भी ऐसे थोड़े ही समझेंगे कि शिवबाबा इनमें बैठा है। ये तो शिव का रथ है ना। तो इनको तो बड़ा सम्भालना चाहिए। देखो, कितना रॉयल्टी से रखना चाहिए। देखो पोप है, कितनी उनकी रॉयल्टी रखते हैं! वो तो कायदे–कानून सीखे हुए हैं। तुम्हारे में तो कई हैं जिनको फज़ीलत भी नहीं है बाप से, शिवबाबा से या बड़े बाबा से कैसे बात करनी चाहिए। सर्विस में बच्चे बिज़ी रहना चाहिए। ब्राह्मण माना ही जिनको अभी यह सत्यनारायण की सच्ची कथा...। तुम्हारे पास है अमरकथा, तुम्हारे पास है तीजरी की कथा...। त्रिकालदर्शी तुम हो। तो देखो, तुमको कितनी सर्विस करनी चाहिए। तुम निमित्त बने हो भारत को स्वर्ग बनाने। तो कितना हौसला चाहिए! बाकी मुरझाए हुए मुख वो तो जैसे क्या है! बहुत हर्षित मुख...। स्टूडेण्ट लाइफ में देखो कितने खेलते, कूदते, खुश रहते हैं; क्योंकि सिर पर कोई बोझा नहीं है। तुम्हारे पास क्या बोझा है! तुम भी स्टूडेण्ट लाइफ है। स्टूडेण्ट सो भी लाइफ कितनी है? अरे, एक घण्टा। कोई 4 घण्टा थोड़े ही तुमको पढ़ाया जाता है। 1 घण्टा भी किसको फुर्सत नहीं मिलती है। प्रभाव बड़ा तेज है एकदम। वो इस तरफ फिर मुँह करे वो नाक से पकड़कर इस तरफ मुँह कर देती है। ऐसी है कड़ी। जैसे बाज़। सुनने में भी आ जाता है ना.....ये सभी बातें छोटेपन की हैं। तो ये माया है जैसे बाज़....। इसलिए बड़ी खबरदारी रखनी चाहिए। माया आ करके नाक–कान न काट लेवे और काट लेती है। देखो, कितनी रिपोर्ट..– बाबा, आज हमारा काम ने नाक काट दिया, कान काट दिया। आज क्रोध ने काट दिया। तो ये माया बाज़ हुई ना। ये श्रवणों के ऊपर चम्बा मारती रहती है। अभी है पहाका, इससे ताल्लुक रखता है। बरोबर अचानक ही बैठे–2 नाक एकदम काट देती है। बेनका बनाय देती है अगर खबरदार न रहते हैं तो। बाबा सबको समझाते भी बहुत रहते हैं। देखो, ये सुनने वाले, बाबा कहते हैं याद रख देना माया का तूफान इतना ज़ोर से आएगा, इतना ज़ोर से आएगा, इतना जोर से आएगा तुमको बेहोश कर देगा। न चाहते हुए भी तुम्हारा नींद एकदम फिटाय देगी। तुम चाहेंगे कि हम सोकर आराम से सुबह को उठें। सुबह को उठकर बैठेंगे ऐसे–2 विकल्प आएँगे जो तुम एक मिनट भी बाप को याद नहीं कर सकेंगे। ऐसी भी तुम्हारी हालत करेगी। ...होती है ना। तो कभी–2 कोई ऐसे होते हैं बस अभी गिरा, अभी दूसरा ठूँसा लगता है, अभी गिरा। अभी वो ठहर ही नहीं सकते हैं। झट मालूम पड़ जाता है जो एक्सपर्ट होता है बॉक्सिंग देखने वाला। झट समझ जाते हैं कि ये नहीं ठहर सकेंगे। वो तो बड़े पहलवान हैं। फिर भले यहाँ–वहाँ कितने भी धक्के खाते रहें, खिलाते रहें ; परन्तु फिर हार देते हैं। तो हमारे पास भी ऐसे–2 कच्चे बच्चे हैं, जो समझा जाता है कि ये ठहर नहीं सकेंगे। इनमें कोई–2 ऐसे अवगुण हैं.....। देखो, भला यही एक खान–पान का अवगुण है ना, कुछ भी उनकी दिलपसन्द की कोई खाने की चीज़ न मिली तो ये सब पढ़ाई छोड़कर चला भी जाएगा। ...गुस्सा लगा कोई बात के ऊपर, ये गया। ये लोभ भी तो हराय देते हैं ना। मोह भी तो हराय देते हैं ना। सब बातें हराय देने वाली हैं। थोड़ी–सी बात भी हराय देती है। तो ऐसे बच्चे बहुत हैं। बच्चों को अभी एक तो...। वास्तव में ये है राजयोग; इसलिए बेगर लाइफ तो नहीं कह सकते हैं; परन्तु गुप्त बेगर लाइफ रखनी है। बेगर लाइफ माना मेरा कुछ नहीं है। मेरा ये शरीर भी नहीं है। ये सब हमने बाप को दे दिया है। तो ऐसे नहीं है कि मैं(ने) शरीर दे दिया बाप को, कोई बाप को सम्भाल करनी है। नहीं, शरीर की मुझे अच्छी तरह से सम्भाल करनी है। बाप का बना हूँ तो बहुत शृंगारना है। तो आत्मा को पहले–2 शृंगारना है तो शरीर आपे ही शृंगारित मिलेगा। तो आत्मा को

चाहिए सब दैवीगुण और याद बाप की। नहीं तो वास्तव में आत्मा सब कुछ करती है। शरीर थोड़े ही कुछ करता है। आत्मा ही इन ऑरगन्स द्वारा सब कुछ करती है। आत्मा ही अविनाशी है, वो विनाशी है। तो आत्मा जोर है ना; परन्तु यहाँ माया जब आती है तो फिर शरीर...बन जाता है। देह–अभिमान आ जाता है। ...एक बड़ी भारी मुसीबत है, सत्यानाश कर देती है। ..... तो भी चेहरा खुला रहता है। मैनर्स किसकी ...होते हैं तो भी समझा जाता है– ये तो देखो...बुद्धू।

(रिकॉर्ड बजा :– चल उड़ जा रे पंछी...) .....तो अभी सिर्फ बच्चे जान गए हैं कि बरोबर ये बाप को न जानने से...। एक तो न जानना और जानना तो फिर कहना कि कुत्ते–बिल्ले सबमें है। ड्रामा की नूँध है। मनुष्य की बुद्धि भी ऐसी ही है पत्थरबुद्धि जो उनको ये कहना पड़ता है; क्योंकि परवश है ना। माया के वश है। माया के वश है, रावण के वश है, वो नहीं जानते हैं। ये बच्चियाँ यहाँ जानती हैं। न जानती हैं तो रावण के वश हो करके फिर वही रावण का काम करती हैं। ...यहाँ रहने वाले खास उनका आपस में बहुत प्यार चाहिए। सन्मुख रहते हैं तो नाम भी बाला करें। नहीं तो बाबा को बोल देना पड़ता है कि भई यहाँ की सब पच्छर हैं। ये किसको भी प्यार (करना) जानती नहीं हैं। शांति या सुख का वर्सा कैसे मिल सकता है? ...सबको याद करते हैं। बाकी तो वही है जो इनकी पुरानी चाल है। अच्छा! आज सतगुरूवार है। इसको हम कहेंगे सत्गुरूवार, दूसरे कहेंगे गुरूवार; क्योंकि मालूम नहीं है सत्गुरूवार किसको कहा जाता है। सतगुरू किसको कहा जाता है कोई जानते नहीं हैं। ये जो यहाँ के लौकिक गुरू हैं, जो सत्य नहीं बोलते हैं, झूठ बोलते हैं। उसमें पहले नंबर की झूठ है ईश्वर सर्वव्यापी है, कुत्ते में, बिल्ले में, फलाने में। सबसे जास्ती पाप इसको कहा जाता है। ऐसे पाप आत्माओं के लिए भी बाप कहते हैं कि जो साधु लोग ऐसे बोलते हैं कि कुत्ते में, बिल्ले में, सबमें हैं, ऐसे साधु–संत, साधुओं में सब आ गए, साधु,संत,महात्माओं का भी उद्धार करता हूँ; क्योंकि वो भी पतित हैं। ये तो सिद्ध करके दिखलाया है कि देखो, पतित–पावन कहा जाता है ज्ञानसागर को और ये पतित–पावन कहा जाता है पानी के सागर को। देखो, उनमें मनुष्यों को ले जा करके डुबाते हैं और खुद भी सिद्ध करके दिखलाते हैं कि हम भी पतित हैं। हम भी इसमें स्नान करते हैं। तो इसलिए उनको गुरू कहा जाता है भक्तिमार्ग का। दुर्गति मार्ग तरफ ले जाने के उसको गुरू कहा जाता है। सत्गुरू तो एक ही है। बाप समझाते हैं ना कि गुरू लोग जो कलहयुगी हैं, गुरू तो कोई सतयुग–त्रेता में होते ही नहीं हैं; इसलिए जो कलहयुगी गुरू हैं वो बोरे और सत्गुरू आ करके तारे और गाया भी उनको जाता है। खिवैया भी उनको कहा जाता है। कभी इन लोगों को खिवैया थोड़े ही कहा जाता है। ये सब भक्तिमार्ग के गुरू हैं अर्थात् दुर्गति मार्ग में ले जाने वाले। ये बाप बैठ करके समझाते हैं। तुम लोगों को तो अभी–2 बहुत अच्छी प्वाइंट्स मिलती हैं। तो देखो, ये पतित–पावन को बुलाते हैं और कह देते हैं सर्वव्यापी है या अपन को कह देते हैं श्री–श्री 108। शिवबाबा का जो पतित–पावन का टाइटिल है वो अपने सिर पर लगा देते हैं। देखो, ये ठगी करते हैं ना। अभी गवर्मेन्ट तो कोई है नहीं जो इन्हों को कैद में डाले। डाला है ; परन्तु...। लिखा हुआ है कि बरोबर एक राजा था, इन सबको जेल में डाल दिया था ; परन्तु वो बात नहीं है। रावण की जेल में तो पड़े हैं यानी रावण ने ही इनको जेल में डाल दिया है। तो आज बच्चों के लिए सत्गुरूवार है ; इसलिए बाप–दादा आज सभी सेन्टर्स के...। यूँ तो रोज़ ही सबको यादप्यार भेज रहे हैं। आज खास गुरूवार के दिन सभी सेन्टर्स के सर्वोत्तम ब्राह्मण कुलभूषण...। देखो, सर्वोत्तम माना देवताओं से भी तुम ब्राह्मण उत्तम हो; क्योंकि अभी जैसे बाप पतित को पावन बनाय रहे हैं वैसे तुम उनके बच्चे भी पतित को पावन बना रहे हो अथवा मनुष्य को देवता बना रहे हो अथवा भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बना रहे हो अथवा काँटों को फूल बना रहे हो। ऐसे सभी सेन्टर्स के सर्विसेबुल बच्चे ब्राह्मण कुलभूषण स्वदर्शन चक्रधारी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का और मधुबन के बच्चों का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।